1.

PAPER - I

Shanti Parva

Q) महाभारत के शांति पर्व में वर्णित राजा के कर्तव्यों की विवेचना करें।

Ans) महाभारत का बारहवां पर्व शांति पर्व जीवन की समस्याओ को सुलझाने तथा राजनीतिक सफलता के गुर मंत्रो को समझाने का कार्य हजारो वर्षो से करता आ रहा है। इसलिए इस इतिहास ग्रंथ को हम अपना धर्म ग्रंथ मानते आये है। इस धर्म ग्रंथ मे राजा के अधिकारों एवं कर्तव्यो की विस्तृत विवेचना की गई है।

राजा के कर्तव्यो के संबंध मे शांति पर्व मे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को काफी विस्तार से शिक्षा दी है उनके अनुसार राजा को सबसे पहले अपने अनुसार राजा को सबसे पहले अपने मन पर विजय प्राप्त करना चाहिए उसके बाद शत्रुओ को जीतने की चेष्टा करनी चाहिए। जिस राजा ने अपने मन को नहीं जीता, वह शत्रु पर विजय प्राप्त नही कर सकता। राजा को राज्य की सुरक्षा हेतू, किलों में, राज्य की सीमाओं पर तथा नगर और गाँव के बगीचे में सेना रखनी चाहिए। राजा का सबसे प्रधान कर्तव्य अपनी प्रजा का रक्षा करना है और प्रजा का रक्षा तभी संभव है जब राज्य सुदृढ एवं बाहरी आक्रमण से बेफ़िक्र हो। राजा को सरल स्वभाव से संपन्न होना चाहिए। उसे धैर्य एवं बुद्धि के बल से सत्य को ग्रहण करना चाहिए, तथा काम-क्रोध का त्याग कर देना चाहिए। राजा को लोभी तथा मुर्ख मनुष्यों को काम और अर्थ के साधन जुटाने

1.

PAPER - I

Q. महाभारत के शांति पर्व में वर्णित राजा के कर्तव्यों की विवेचना करें।

Ans. महाभारत का बारहवां पर्व शांति पर्व जीवन की समस्याओं को सुलझाने तथा राजनीतिक सफलता के गूढ़ मंत्रो को समझाने का कार्य हजारो वर्षो से करता आ रहा है। इसलिए इस इतिहास ग्रंथ को हम अपना धर्म ग्रंथ मानते आये है। इस धर्म ग्रंथ मे राजा के अधिकारों एवं कर्तव्यो की विस्तृत विवेचना की गई है।

राजा के कर्तव्यों के संबंध मे शांति पर्व मे भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर को काफी विस्तार से शिक्षा दी है उनके अनुसार राजा को सबसे पहले अपने अनुसार राजा को सबसे पहले अपने मन पर विजय प्राप्त करना चाहिए उसके बाद शत्रुओं को जीतने की चेष्टा करनी चाहिए। जिस राजा ने अपने मन को नहीं जीता, वह शत्रु पर विजय प्राप्त नही कर सकता। राजा को राज्य की सुरक्षा हेतू, किलों में, राज्य की सीमाओं पर तथा नगर और गाँव के बगीचे में सेना रखनी चाहिए। राजा का सबसे प्रधान कर्तव्य अपनी प्रजा का रक्षा करना है और प्रजा का रक्षा तभी संभव है जब राज्य सुदृढ़ एवं बाहरी आक्रमण से बेफिक्र हो। राजा को सरल स्वभाव से संपन्न होना चाहिए। उसे धैर्य एवं बुद्धि के बल से सत्य को ग्रहण करना चाहिए, तथा काम - क्रोध का त्याग कर देना चाहिए। राजा को लोभी तथा मूर्ख मनुष्यों को काम और अर्थ के साधन जुटाने

3

मे नही लगाना चाहिए। क्योंकि यदि मुर्ख मनुष्य को अर्थ संग्रह का अधिकार बना दिया जाये तो वह अनुचित उपायों से प्रजा को क्लेश पहुँचाता है।

राजा को प्रजा के आय का छठा भाग कर के रूप मे ग्रहण करके उचित शुल्क या टैक्स लेकर अपराधियों को आर्थिक दंड देकर शास्त्र के अनुसार व्यापारियों की रक्षा करना चाहिए।

राजा को न्याय संगत उपाय से राष्ट्र को सुरक्षित रखते हुए उसका उपभोग करना चाहिए। जो राजा लोभ वश प्रजा से अधिक कर लेकर उसे कष्ट पहुँचाता है वह अपने ही हाथो अपना विनाश करता है।

राजा को हर व्यक्ति को उसके योग्य ही काम देकर सम्मानित करना चाहिए। जो बहुत विद्वमान हो उन्हें धर्म तथा शासन कार्यो मे लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रमाणों के ज्ञाता न्याय शास्त्र के उपलब्ध करने वाले तथा वेदो के तत्वज्ञ हो उन्ही को मंत्रणा तथा शासन कार्यो मे लगाना चाहिए। आन्वीक्षकी वेदत्रयी वार्ता तथा दंड नीति के पारंगत विद्वान हो उन्हे सभी कार्यों मे नियुक्त करना चाहिए क्योंकि वे बुद्धि की पराकाष्ठा को पहुँचे हुए होते है।

राजा को चारों वर्णो पर सदा ही दया करनी चाहिए। उसे ब्राह्मणों के

3.

साथ अधिक दयालुता दिखानी चाहिए। अगर ब्राह्मणों के द्वारा बहुत बड़ा अपराध भी हो जाए तो उन्हें प्राण दण्ड न देकर अपने राज्य की सीमा से बाहर करके छोड़ देना चाहिए।

राजा को क्षमाशील भी होना चाहिए पर जरूरत से ज्यादा नहीं क्योंकि नीच मनुष्य क्षमाशील राजा का सदा उसी प्रकार तिरस्कार करते हैं जैसे हाथी का महावत उसके सिर पर ही चढ़े रहना चाहता है।

राजा को अपने गुप्त चरों द्वारा बाजारों लोगों को घूमने-फिरने के स्थानों, सामुदायिक उत्सवों, भिक्षुओं के समुदायों, बगीचों, उद्यानों, विद्वानों की सभाओं, विभिन्न प्रान्तों, चौराहों तथा धर्मशालाओं मे शत्रुओं के भेजे हुए गुप्तचरों का पता लगाते रहना चाहिए। इस प्रकार राजा का धर्म है कि वह शत्रु के गुप्तचरों का टोह लेता रहे और यदि राजा को अपने पक्ष स्वयं ही निर्बल जान पड़े तो मंत्रियों से सलाह लेकर बलवान शत्रुओं के साथ संधि कर लेना चाहिए। राजा को न्याय करते समय वादि-प्रतिवादि की बातों को सुनने के लिए अपने पास सर्वार्थदर्शी विद्वान पुरुषों को बैठाकर रखना चाहिए। क्योंकि विशुद्ध न्याय पर ही राज्य प्रतिष्ठित होता है।

राजा को सतत अध्ययनशील भी रहना चाहिए क्योंकि राज्योचित गुणों मे

सर्व प्रमुख राजा को वेदों और वेदान्तों का विद्वान, बुद्धिमान, तपस्वी, दानशील तथा यज्ञ परायण होना माना गया है।

राजा का कर्तव्य है कि वह निम्नलिखित सात वस्तुओं की रक्षा अवश्य करे।
1) राजा का अपना शरीर 2) मंत्री 3) कोष
4) दण्ड 5) मित्र 6) राष्ट्र 7) नगर।

इसके अतिरिक्त राजा को छः गुण तीन वर्ग तथा तीन परम वर्ग की जानकारी भी अच्छी तरह होनी चाहिए। छः गुणों को स्पष्ट करते हुए शांति पर्व मे बताया गया है कि शत्रु पर चढ़ाई करना, वैर करके बैठ जाना, शत्रु को डराने के लिए आक्रमण का प्रदर्शन मात्र करके बैठ जाना, शत्रुओ मे भेद डलवा देना तथा किसी दुर्ग या दुर्जय राजा का आश्रय लेना। त्रिवर्ग को अस्पष्ट करते हुए बताया गया है कि क्षय, स्थान तथा वृद्धि अर्थात धर्म, अर्थ तथा काम को परम त्रिवर्ग कहा गया है। इसका पालन करना राजा का परम कर्तव्य है।

जो राजा षड्वर्ग, पंचवर्ग, दसमुख दोष तथा आठ अन्य दोष इन सबको जीत लेता है वैसे राजा को पराजित करना देवताओं के भी वश मे नही होता। शांति पर्व मे षड्वर्ग को स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि काम, क्रोध, लोभ मोह, मद तथा मत्सर्य इन छः अतिरिक्त

5

शत्रुओं के समुदायों को शत्रु वर्ग कहते हैं।

राजा को अपने शत्रुओं के प्रति उल्लू जैसा बर्ताव करना चाहिए। जैसे उल्लू पक्षी रात मे सोये कौओं पर चुप-चाप धावा करता है, उसी प्रकार राजा को शत्रुओं की असावधान दशा मे ही उन पर आक्रमण करना चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार चींटी के समान धीमी गति से आगे भी बढ़ना चाहिए।

राजा को आग की चिनगारियों तथा सेमल के बीज से कर्तव्य की शिक्षा लेनी चाहिए। जैसे आग की छोटी सी चिनगारी बड़े से बड़े वन को जला डालने की शक्ति रखती है उसी प्रकार छोटा सा शत्रु भी यदि दबाया न जाए तो बहुत बड़ी हानि कर सकता है। इसी प्रकार छोटा सा सेमल का बीज महान वृक्ष के रूप मे परिनत होता है उसी प्रकार लघु शत्रु भी समय आने पर प्रबल हो जाता है। अतः दुर्बल अवस्था मे ही उसे उखाड़ फेकना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि महाभारत के शांति पर्व मे राजा को साम, दान, भेद, दण्ड, माया उपेक्षा और इन्द्रजाल इन सबका सहारा लेना चाहिए।

निस्कर्ष :- राजा को कुशल

6

की भाँति अपने स्वार्थ का विचार करना चाहिए अवसर पड़ने पर सिंह के समान पराक्रमण दिखाना चाहिए भेड़िये की तरह छलांग मारते हुए उनद्दृश्य हो जाना चाहिए। राजा को मोर की भाँति विचित्र आकार धारण करने वाला घोड़े के समान दृढ़ भक्ति रखने वाला और कोयल की तरह मीठे वचन बोलने वाला होना चाहिए। राजा को कौओ की तरह सबसे चकौना रहना चाहिए। अपने राष्ट्र की प्रजा के साथ धोखा करनेवाला राजा राज्य और जीवन दोनो से हाथ धो बैठता है। राजा को सदैव प्रजा को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करना चाहिए। जैसे - पाला हुआ बछड़ा बलवान होने पर काम करने योग्य हो जाता है उसी प्रकार सुरक्षित राष्ट्र राजा के ही काम आता है।